ISSN 0...

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi La...

(2)

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं साहित्य की वार्षिक शोध पत्रिका

संपादक
डॉ. अश्विनी महाजन
रीडर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन
WZ-724, पालम गांव, नई दिल्ली-110045

208	साक्षात्कार विधा की संरचना : साहित्यिक पत्रिका दस्तावेज–डॉ० मलकीयत सिंह	397
212	शिक्षा महर्षि प्राचार्य टी. ए. कुलकर्णी का शैक्षिक योगदान–प्रा० प्रशांत देशपांडे	402
217	रमाजी गायकवाड़ का नौसेना दल - एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० अतुल ओहाल	407
221	महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना–शाहिद हुसैन; डॉ० श्रद्धा हिरकने	410
224	मध्य एशिया क्षेत्र में एक 'नया महान खेल'–गुरदीप सिंह	413
227	भारत में लोकतान्त्रिक शासन और सामाजिक रूपान्तरण–सूर्य भान सिंह	418
230	विकास प्रशासन एवं जनसहभागिता : एक अनुभवमूलक अध्ययन–डॉ० विनीत कुमार; डॉ० नेमीचन्द गोलेचा	424
232	अमरकांत के उपन्यासों में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश–अर्चना वर्मा; डॉ० रानी अग्रवाल	430
237	गाँधीजी और अस्पृश्यता–डॉ० रमाकान्त पाण्डेय	433
242	युवाओं की राजनीतिक जानकारी में मास मीडिया की भूमिका–डॉ० मधुदीप सिंह; हिमांशु छाबड़ा	437
246	सतत् विकास की अवधारणा - एक ऐतिहासिक विवेचन–डॉ० अश्वनी आर्य	444
249	छत्तीसगढ़ी भाषा : दशा एवं दिशा–डॉ० आंचल श्रीवास्तव; विवेक तिवारी	447
253	विधि के शासन की अवधारणा, विकास एवं चुनौतियाँ–वकील शर्मा	452
255	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित स्त्री समस्याएँ–पूजा शुक्ला	456
259	पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका–डॉ० उमाशंकर त्रिपाठी	459
267	जनजातीय जीवन में पुलिस की भूमिका और उसकी औपन्यासिक अभिव्यक्ति–डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय	463
273	गोदान की दार्शनिक पृष्ठभूमि–डॉ० आरती कुमारी	467
276	उषा प्रियंवदा की कहानियों में निहित अकेलेपन की समस्या–रजनी राय	471
280	नारी चेतना: मार्कण्डेय की कहानी 'सोहगइला' के संदर्भ में–अनूप कुमार पटेल	474
284	माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण कुशलता का अध्ययन: व्यक्तित्व के सन्दर्भ में–आशा अवस्थी; डॉ० श्रद्धा शुक्ला	477
288	छत्तीसगढ़ के श्रमिकों में पलायन के कारण एवं समस्या का सामाजिक अध्ययन (रायपुर संभाग के विशेष संदर्भ में)	
291	–संजय कुमार जांगडे; श्रीमती डॉ० रीना तिवारी	480
293	बाढ़ सम्भाव्य पूर्वी मैदानी प्रदेश में जलवायु परिवर्तन का भूजल स्तर पर प्रभाव–अमिता बाई यादव	485
296	अन्तिम केवली जम्बूस्वामी–पवन कुमार जैन	494
301	भारत में विद्यालयी शिक्षा तक पहुँच के सामाजिक निर्धारक–उमेश गुप्ता; मधु कुशवाहा	496
304	प्रजातंत्र के कवि नागार्जुन और धूमिल–डॉ० ओम प्रकाश सैनी	501
308	जयप्रकाश नारायण का भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन: एक अध्ययन–आलोक तिर्की	505
312	राजनीतिक-जागरूकता के विविध पक्ष–हामिद अली	508
315	बिहार की राजनीति में दलों के गठबंधन में बदलाव का असर: एक अध्ययन–कृष्णदेव राय	511
322	आधुनिक बिहार में दलित सशक्तिकरण की राजनीति: एक अध्ययन–प्रभात आनन्द	514
329	संस्कृत साहित्य में तन्त्र साधना–तरुण कुमार सिंह	517
335	छोटे राज्यों का गठन राष्ट्रीय एकता एवं विकास के लिए आवश्यक: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० संजय कुमार झा	519
348	अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास (मानस का हंस और खंजन नयन के संदर्भ में)–चित्रा झा	522
353	भारत में आतंकवाद के दुष्परिणाम: एक अध्ययन–सुरेन्द्र प्रसाद	525
360	राज्यपाल की स्वविवेकीय शक्तियाँ–एक विवेचना–वृजेन्द्र कुमार मिश्र	528
367	दीन-ए-इलाही: स्वरूप और उद्देश्य–शक्ति सिंह	531
372	रसिक रसेश के काव्य में आधुनिकता बोध–ऋचा यादव	534
376	मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में सामाजिक सरोकार–संतोष कुमार	539
381	संस्कार उपन्यास की पात्र-योजना–डॉ० प्रीति राय	542
385	मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में मध्यमवर्गीय जीवन का सौंदर्य–डॉ० प्रीति राय; हरकेश कुमार	546
389	हरियाणा में जल संरक्षण की परम्परागत एवं आधुनिक प्रणालियाँ–हरिओम; डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा	552
393	महाविद्यालयी विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन–अजय कुमार यादव; डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह	554

प्रजातंत्र के कवि नागार्जुन और धूमिल

डॉ० ओम प्रकाश सैनी

(डी. लिट्), एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, आर. के.एस.डी. कॉलेज, कैथल, हरियाणा

प्रस्तावना

बाबा नागार्जुन (30 जून 1911 से 5 नव.1998)और धूमिल आधुनिक काल की दो अलग-अलग धाराओं के प्रतिनिधि कवि हैं। बाबा नागार्जुन बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। एक साथ हिंदी और मैथिली के अप्रतिम कवि, कहानीकार, उपन्यासकार संपादक और अनुवादक के रूप में उनकी प्रतिभा अनूठी है। नागार्जुन की कृतियों में 'युगांतर', 'प्यासी पथराई आँखें', 'सतरंगी पंखों वाली', 'खून और शोले', 'प्रेत का बयान', 'हजार हजार बाहों वाली', 'तालाब की मछलियां', 'तुमने कहा था', आदि प्रमुख हैं। गरीबों के हिमायती नागार्जुन क्रांति और विद्रोह के कवि हैं। उनके काव्य में पूंजीपति शोषक वर्ग के प्रति हिंसा का भाव है। कवि व्यवस्था परिवर्तन के लिए कटिबद्ध है। नागार्जुन की कविताएं देश की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था का जीवंत दस्तावेज हैं। कवि का मानना है कि देश को जो आजादी मिली है, वह केवल कागज की आजादी है जो तुच्छ और निरर्थक है। प्रारंभिक दौर में नागार्जुन पर वामपंथी विचारधारा से प्रभावित होने का लेबल चस्पा किया गया। ठीक है, वह मार्क्सवादी चिंतन से प्रभावित हैं किंतु उन्होंने ऐशो आराम का जीवन व्यतीत करने वाले वामपंथियों, सड़कों चौराहों पर धरना-प्रदर्शन करने वाले राज नेताओं, यहां तक के संसद के गलियारों में किसान, मजदूर और सर्वहारा वर्ग के हितों के लिए लंबे-लंबे भाषण देने वाले व्यवस्था के ठेकेदार राजनेताओं को खरी-खरी सुनाई है। वास्तव में नागार्जुन की कविता में निराशावादी स्वर कहीं नहीं है। उसमें जीवन की ऊष्मा है। नागार्जुन की कविता के समीक्षक विजय बहादुर सिंह के मतानुसार 'नागार्जुन के यहां निम्न वर्ग या सचमुच का सर्वहारा वर्ग कविता का नायक है।" नागार्जुन ऐसे कवि हैं जो समाज के अन्य लोगों की वेदना से स्वयं चूर-चूर हो गए। वह देश, धरती और जनता के कवि है। वह ऐसे कवि हैं जो श्रमिक वर्ग के लिए युग के विष को पीने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। 'उन्होंने बड़ी संख्या में मेहनतकश लोगों की तबाह जिंदगी और उनके राजनीतिक संघर्षों के ऊपर कविताएं लिखी हैं, जहां कहीं जनता चाहे वह छोटा सा समूह ही क्यों न हो, शोषण का प्रतिकार करती है और अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष करती है ये पूरे दिल से उन्हें समर्थन देते हैं, चाहे वह 48 का तेलंगाना विद्रोह हो या आज का नक्सलवादी आंदोलन, चाहे वह जूलियस रोजनबर्ग का संघर्ष हो या नेपाली जनता का संघर्ष, चाहे वह भारत के मेहनतकशों का कोई आंदोलन हो या वियतनामी जनता का मुक्ति संघर्ष, नागार्जुन ने हमेशा संघर्षरत लोगों का साथ दिया।" कवि ने देश की भूख, गरीबी, महंगाई, बेकारी और सांप्रदायिकता जैसी समस्याओं का बखूबी चित्रण किया है। इतना ही नहीं कवि ने इन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों को जन्म देने वाले राजनेताओं पर करारा व्यंग्य भी किया है। कवि ने खुरदरे पैर वाले रिक्शा चालक, गंगा नदी में डुबकी लगाकर पैसे खोजने वाले मल्लाहों के नंग-धड़ंग बच्चों तथा खाली हाथ, खाली पेट और खाली प्लेट के साथ घूमती देश की बहुसंख्यक आबादी की पीड़ा को सशक्त अभिव्यक्ति दी है।

सुदामा पांडेय धूमिल (9 नवंबर 1936 से 10 फरवरी 1975) साठोत्तरी कवियों में श्रेष्ठ है। धूमिल प्रारंभ में गीत-बिरहा आदि लिखते थे। जून 1961 में स्नेहार पत्रिकाश में उनकी पहली कविता स्वांसुरी जल गईश प्रकाशित हुई। धूमिल और नागार्जुन की चेतना में ज्यादा अंतर नहीं है। धूमिल भी वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था, गरीबी, भूख, अकाल जैसी सामाजिक समस्याओं के खिलाफ खड़े नजर आते हैं। धूमिल की 'संसद से सड़क तक', 'कल सुनना मुझे', 'माया की रात', 'पटकथा', 'मोची राम' और 'सुदामा पांडे का प्रजातंत्र' में वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना है। धूमिल भी सशस्त्र क्रांति के पक्षधर हैं। ये चाहते हैं कि देश में व्यवस्था परिवर्तन हो जिससे दूसरी नई प्रजातांत्रिक व्यवस्था की स्थापना की जा सके। धूमिल नई कविता के दौर के कवि हैं। नई कविता का कवि समाज में परिव्याप्त निराशा, कुंठा, घुटन, पीड़ा एवं संत्रास को वाणी प्रदान कर रहा था। वहीं धूमिल ने समाजोन्मुख होकर लिखा तथा कविता को एक नया आयाम दिया। धूमिल ने सामाजिक सरोकारों की जमीन को जिस संजीदगी से पकड़ा और उसे कविता में ढालकर परोसा उस मार्ग पर चलते हुए उन पर अराजकता, विद्रोह, नक्सलवाद, भ्रांति और दिशाहीनता के आरोप मढ़े गए। धूमिल की कविता युगीन समस्त सामाजिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्यों को स्पर्श करती है। धूमिल की कविता में राजनीतिक अवसरवादिता, चुनावों के दौरान जनता से किए जाने वाले झूठे वायदे, प्रजातंत्र के खोखलेपन, नेताओं और पूंजीपतियों की सांठगांठ, भ्रष्टाचार, बुद्धिजीवी वर्ग की संकीर्ण मानसिकता आदि समसामयिक विषयों पर रोशनी डाली गई है। हम कहें कि उनकी कविता में जीवन के प्रायः सभी पहलुओं का खुलासा हुआ है। सामान्यतः नागार्जुन और धूमिल दोनों विभिन्न दौर और धाराओं के कवि हैं फिर भी दोनों की कविताओं का प्रमुख स्वर एक ही है। दोनों कवियों ने प्रायः संसद, प्रजातंत्र, समाजवाद, चुनाव व्यवस्था, राजनीति, विदेश नीति, युद्ध, क्रांति, शोषण, भूख गरीबी, बेकारी आदि को ही अपनी कविता के लिए चुना है। यही उनकी कविता की साम्यता है, मौलिकता है, जो उन्हें धारा के विपरीत अलग पांत में विशिष्ट पहचान के साथ खड़ा करती है। प्रश्न उठता है कि आखिर दोनों प्रगतिशील कवियों में ऐसा वस्तु-व्यापारिक साम्य क्यों? उत्तर सीधा-सा है, दोनों की कविता का चिंतन दर्शन एक ही है और वह है मार्क्सवाद। अतः दोनों की ही कविता अंत में जाकर एक सूत्र में बंध जाती है, वह सूत्र है मानवतावाद। वस्तुतः नागार्जुन पर बुद्धधर्म, आर्य समाज, मार्क्सवाद, गांधीवाद आदि का प्रभाव पड़ा है। वहीं धूमिल पर साम्यवाद और नक्सलवाद का प्रभाव

'बुद्धिजीवियों की हमारी अपनी बिरादरी भी / शत-प्रतिशत लिप्त है/ सुविधाएं बटोरते जाने की
द्यूत-क्रीड़ा में /जी हां, अंगूठा दिखा रहे हैं/'

आजादी के इतने वर्षों बाद भी नारी की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। वह सदियों से पुरुष के काय में कैद है। पुरुष-प्रधान समाज में वह आज भी निरी उपभोग की वस्तु है। नागार्जुन के 'तालाब की मछलियां' तथा धूमिल की 'गृहस्थी: चार आयाम' में नारी की दुर्दशा का चित्रण देखते ही बनता है। उत्तर आधुनिक युग में नागार्जुन की 'तालाब की मछलियां' प्रासंगिक बन पड़ी हैं। ये कविता वर्तमान समाज में सामंतकालीन पीड़ित एवं शोषित नारी की याद को ताजा कर देती हैं-

'दो टूटे दांतवाले इन भद्र महानुभाव (मधुरा पाठक) की/ मधुर तृतीय भार्या//

वह कुलीन मैथिल की कन्या/ फिर- फिर सुनने लगी वही आवाज.../

हम भी मछली, तुम भी मछली /
दोनों ही उपभोग की वस्तु हैं /'

धूमिल के अनुसार वर्तमान उपभोक्तावादी संस्कृति में नारी केवल मात्र देह है-

'औरत आंचल है, /जैसा कि लोग कहते हैं- स्नेह है/ किंतु मुझे लगता है- इन दोनों से बढ़कर/ औरत एक देह है/' (गृहस्थी : चार आयाम)

कवि राहुल का कहना है "सामाजिक सुधारों के बाद भी गांव में अछूतों के समान नारियां आज भी मध्ययुगीन बर्बरता और शोषण का शिकार होती रही है। गांवों में आज भी उनकी दशा में कोई खास सुधार नहीं हुआ है। शोषण, व्यभिचार और अनैतिक संबंधों का एक अच्छा खासा चित्र धूमिल की कविता में उपलब्ध है।"[10] वास्तव में धूमिल ने हमारी सामाजिक व्यवस्था की ओर संकेत किया है। सामाजिक विषमता की परिस्थितियों और परिणामों पर उन्होंने विस्तार से प्रकाश डाला है।

उपसंहार

नागार्जुन देश धरती और जनता के कवि हैं। जनकवि के नाम से विख्यात नागार्जुन के काव्य का क्षेत्र अत्यंत विशाल है। उनकी कविता का आधार श्रमिक वर्ग है। ये वसुधैव कुटुम्बकअर्थात एक व्यक्ति नहीं अपितु समूची उत्पीड़ित जनता के प्रतिनिधि कवि हैं। उनकी पीड़ा स्वयं की न होकर करोड़ों अभिशप्त जनों की पीड़ा है। सामाजिक और राजनैतिक बदलाव के लिए वे क्रांति के पक्षधर बनकर उभरे हैं क्योंकि क्रांति ही एकमात्र ऐसा उपाय है जिसे अपनाकर खेतीहर किसान मजदूर अपने अधिकार प्राप्त कर सकता है। निश्चित रूप से वे एक महर्षि हैं जिन्होंने बहुसंख्यक समाज की पीड़ा को अभिव्यक्त किया। धूमिल साठोत्तरी हिंदी कविता के आधार स्तंभ कवि हैं। धूमिल जनवादी चेतना के कवि हैं। धूमिल ने समाज की सभी समस्याओं की ओर संकेत किया है। धूमिल की कविता में भ्रष्टाचार संकुल राजनीतिक स्वर की गूंज सर्वाधिक मात्रा में सुनाई पड़ती है, उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक तथा नारी संबंधी स्थितियों को पूरी ईमानदारी के साथ सामने लाने की कोशिश की है। जनता को सजग सचेत बनाकर और वर्तमान व्यवस्था की बुराइयों को दिखाकर मानव-मात्र का कल्याण उनके काव्य का केंद्र बिंदु है।

समग्रत: कहा जा सकता है कि नागार्जुन और धूमिल की कविता में जीवन के तमाम पहलुओं की अभिव्यक्ति सार्थक ढंग से हुई है। दोनों कवियों की कविताओं का फलक अत्यंत विस्तृत है। दोनों ने देश की प्रदूषित राजनीति को अपने काव्य का विषय बनाया है। जीवन की कोमलता और कठोरता, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवेश, सर्वहारा वर्ग का जीवंत चित्रण, स्त्री शोषण आदि जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन इन दोनों कवियों की लेखनी से प्रसूत हुआ है। देश में व्याप्त भूख, गरीबी, अकाल, महंगाई, बेकारी, जन असंतोष, दमन, और इनके कारण उपजी क्रांतिभावना का पटाक्षेप दोनों कवियों की कविताओं में बखूबी हुआ है। नि:संदेह आजादी के पहले और बाद में जन समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करने का काम यदि किसी कवि ने किया है तो वे नागार्जुन और धूमिल ही हैं। वे सच्चे अर्थों में जनता के प्रतिनिधि कवि हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि नागार्जुन और धूमिल दोनों मानवीय संवेदनाओं के कवि हैं। उन्होंने मानवीय संवेदना को भावना के सहारे यथार्थ के धरातल पर उकेरा है।

संदर्भ सूची

1. सुरेश चंद त्यागी, नागार्जुन, विजय बहादुर सिंह सामान्य जन के महाकवि, आशीर प्रकाशन, सहारनपुर, 1984, पृष्ठ. 110-111
2. डॉ. नरेंद सिंह, साठोत्तरी हिंदी कविता में जनवादी चेतना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 1990, पृष्ठ. 158
3. डॉ. चमनलाल गुप्त, सुदामा पांडेय धूमिल की कविता में यथार्थ बोध, भावना प्रकाशन, दिल्ली- 1990, पृष्ठ. 23
4. डॉ. शेरजंग गर्ग, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य, साहित्य-भारती, दिल्ली- 1977, पृष्ठ. 38
5. डॉ. चमनलाल गुप्त, सुदामा पांडेय धूमिल की कविता में यथार्थ बोध, भावना प्रकाशन, दिल्ली- 1990, पृष्ठ. 40
6. डॉ. मांडवल उपाध्याय, समकालीन हिंदी कविता और धूमिल, अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद- 1986, पृष्ठ. 68
7. डॉ. रणजीत प्रगतिशीलता और अभिव्यक्ति की स्वाधीनता, साहित्य निकेतन, कानपुर- 1989, पृष्ठ. 104
8. डॉ. नरेंद सिंह, साठोत्तरी हिंदी कविता में जनवादी चेतना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 1990, पृष्ठ. 160
9. डॉ. सत्यनारायण, नागार्जुन कवि और कथाकार, रचना प्रकाशन, जयपुर- 1991, पृष्ठ. 138
10. राहुल, विपक्ष का कवि धूमिल, नीरज बुक सेंटर, दिल्ली- 1992, पृष्ठ. 98

शोध

कोई व्यक्ति अके
लोकतंत्र में ऐसे कई
देश के नाम कर दी
यादों में रामलीला मैद
रखने की अपील करा
यादव, नीतीश कुमार,
जाते थे लेकिन सत्ता
सबसे ताकतवर नेता
उनकी ही पार्टी में को
हो नहीं होता।

जयप्रकाश नारायण
'फूलरानी देवी' थीं।
नारायण को गांधी जी
को आजाद देखने की

अमेरिका से पढ़ा
भारत से बेदखल कर
नेहरू के कहने पर वे
उन्होंने लंबे वक्त के

जयप्रकाश का मत
क्योंकि वे इस व्यवस
'सम्पूर्ण क्रान्ति' आव
थे कि लोकतंत्र के इ
युवाओं ने उनका रास्त
और अपूर्व साहस से
दिया और आजादी के
ने कहा कि यह सत्क
सकती है। इसलिए वे
समय दिया। उन्होंने व
कितना और कैसे का

हालांकि जयप्रका
हुई थी। उन्होंने कांग्रेस
ही नहीं जेल से भाग
और सर्वोदय आंदोलन
'संपूर्ण क्रांति' आंदोल
में एक बड़ा बदलाव